मेरे साथ सनमंधी

मेरे साथ सनमंधी चेतियो, हांसी का है ठौर।
पिउ वतन आप भूल के,कहा देखत हो और।।

साथ जी तुमको उपज्या,खेल देखन का ख्याल।
जाको मूल नहीं बांधे तिन, हांसी का हवाल।।

हांसी होसी साथ में,इन खेल के रस रंग।
पूर बिना बहे जात हैं,कोई आड़ी होत अभंग।।

हरखे हांसी हेत में,करसी साथ कलोल।
मांगी माया सो देखी नीके,कोई न हांसी या तोल।।

ए भोम हांसी देख के, आप होत सावचेत ।
मूल सुख कहे महामति,तुमको जगाए के देत।।